**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री पुरुष संबंध व नारी चेतना

**शिप्रा द्विवेदी,** (Ph. D.), हिंदी विभाग,
**रश्मि द्विवेदी,** शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. प्रथम सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Corresponding Authors**
**शिप्रा द्विवेदी,** (Ph. D.), हिंदी विभाग,
**रश्मि द्विवेदी,** शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम. फिल. प्रथम सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह,
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 01% on 30/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 15 words Plagiarized / 1204 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

eerk dkfy;k ds dFkk lkfgR; L=h iq#"k laca/k esa ukjh psruk lkjka"k %& ekuo lH;rk ds bfrgkl esa dHkh Hkh ukjh lekt foospuk dk fo'k; ugha jghA ukfj;k; tks vkjafHkd dky ls lekt dk fof"k"V vax jgha gSa] ijUrq mudks gkf"k, ij Mky fn;k x;k FkkA vk/kqfudrk ds bl nSkj esa cnyrs lkekftd ifjos"k vkSj cnyrs ekuoh; ewY;ksa us ukjh lewg dks vius iquZewY;kadu ds lanHkZ esa ,d ubZ fn"kk nh gSA ifj.kke :g gqvk fd :g oxZ tks vc rd misf{kr Fkk] mlesa dzkafrdkjh ifjorZu ifjy{kr gksus yxkA ukjh vfLerk dk iz"u ukjh ds lkeus lcls cM+h pqukSrh gSA vkt L=h iq#"k laca/kksa esa ukjh viuh vfLerk dks] vius Lora= O;fDrRo dks cuk, j[kuk

## शोध सार

*मानव सभ्यता के इतिहास में कभी भी नारी समाज विवेचना का विषय नहीं रही। नारियाँ जो आरंभिक काल से समाज का विशिष्ट अंग रहीं हैं, परन्तु उनको हाशिए पर डाल दिया गया था।*

*आधुनिकता के इस दौर में बदलते सामाजिक परिवेश और बदलते मानवीय मूल्यों ने नारी समूह को अपने पुर्नमूल्यांकन के संदर्भ में एक नई दिशा दी है। परिणाम यह हुआ कि यह वर्ग जो अब तक उपेक्षित था, उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। नारी अस्मिता का प्रश्न नारी के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। आज स्त्री पुरुष संबंधों में नारी अपनी अस्मिता को, अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को बनाए रखना चाहती है। स्त्री पुरुष का संबंध चाहे वह पति–पत्नि का हो, चाहे प्रेमी–प्रेमिका का हो, अधिकारी–अधीनस्थ का, गुरु–शिष्य, भाई–बहिन, पिता–पुत्री, स्त्री पुरुष के बनते बिगड़ते संबंधों के विविध आयामों को सूक्ष्म स्तर पर संवेदनाओं के विविध स्वरुपों का चित्रण ममता जी ने किया है।*

## मुख्य शब्द

**पुरूष, नारी, संबंध, जागृति, आधुनिक नारी.**

## पति–पत्नि के संबंध में नारी चेतना

ममता कालिया के कथा साहित्य में पति पत्नी के पारिवारिक संबंधो का चित्रण अधिक होता है। वर्तमान काल में पत्नी के व्यक्तित्व में परिवर्तन हुआ है और उसके संबंध में सामाजिक मान्यताएँ भी बदली हैं। पति–पत्नी जीवन–रुपी रथ के दो पहिए हैं। इनके आपसी सहयोग से ही जीवन चलता है। विवाह के पश्चात् पति–पत्नी के संबंधो में परिवर्तन आने लगता है। वह अपने जीवन में अन्य नारियों को खुश करने के लिए अपनी पत्नी की बेइज्जती भी कर देता है।

एक पत्नी के नोट्स के उपन्यास की कविता का पति भी अन्य स्त्रियों को इम्प्रेस करते हुए अपनी पत्नी का अपमान कर देता है। भारतीय समाज में पति को तो अन्य नारी के साथ संबंध स्थापित करने की स्वतंत्रता देता है किन्तु संबंध बनाना तो दूर, पत्नी यदि किसी से बातचीत भी करती है तो पति उसे संदेह भरी दृष्टि से देखता है।

'पीठ' कहानी का नायक 'हर्ष' तो स्वयं पत्नी की पीठ का चित्र बनाकर अपनी निजी जिंदगी को सबके सामने प्रस्तुत करता है और इसका आरोप पत्नी पर लगाता है। आक्रोशित इन्दुजा कहती है– 'मैं क्या जानू। दर्शन दोस्त है। मैं क्या तुम्हारे दोस्तों को पीठ दिखाती फिरती हूँ। इस प्रकार चेतनशील नारी अपने चरित्र पर लगे लांछन को कभी भी स्वीकार नहीं करती।

प्रेम रहस्य की वास्तविकता का पता तो विवाह के बाद ही होता है। विवाह से पूर्व उसके पति का उसके प्रति जैसा व्यवहार होता है उसमें बाद में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगता है। वह अपनी पत्नी को खिलौना मानकर अपने मनमुताबिक खेलना चाहता है, जिसे कई बार पत्नी असहज रहती है।

## प्रेमी–प्रेमिका के संबंध में नारी चेतना

सृष्टि के निर्माण हेतु नर–नारी में प्रेम प्रमुख आधार है। इसी प्रेम के कारण संबंधों में आपसी प्रेम, लगाव, अपनापन, निकटता आती है। प्रेमी–प्रेमिका ने इसी प्रेम के बलबूते अपने प्रेम के संबंध की नींव रखते हैं।

आधुनिक नारी में जो चेतना आई है उसका प्रभाव उसके प्रेम में भी पड़ता है। वह अपने जीवन में प्रेम को महत्वपूर्ण स्थान देती है। वह अपने प्रेमी से सच्चा प्रेम चाहती है। ममता कालिया के कथा साहित्य के प्रेमी–प्रेमिका भी प्रेम के आधुनिक रुप से संचालित हैं। प्रेम की इसी चेतना को प्रेम कहानी कहते हैं।

'रिश्तों की बुनियाद' कहानी की 'प्रीति' भी अपने प्रेम को साकार रुप देकर परवेज से शादी करना चाहती है। इस नई रोशनी की चकाचौंध में प्रीति को सबकुछ निराला लगता है। उसने फैसला कर लिया है। अब वह अपनी की आजादी स्वयं लड़ेगी। मुँह खोलकर बेधड़क घर के लोगों से कह देगी, 'मैं परवेज के साथ जा रही हूँ एक नई जिंदगी की शुरुआत करने। आप अगर कुछ दे सकते हैं तो सिर्फ आर्शीवाद दीजिए।

नारी चेतना के प्रभाव के कारण आज की लड़की अपने विवाह का निर्णय माँ–बाप पर न छोड़कर उसका निर्णय स्वयं करती है। इस निर्णय में वह अपने परिवार एवं जात–पात तक की परवाह नहीं करती है।

## अधिकारी–अधीनस्थ के संबंध में नारी चेतना

नारी की सदा समाज में एक सी स्थिती नहीं रही, आदि युग से आज तक नारी जीवन कई आयामों में परिलक्षित होता है। प्रत्येक युग में नर नारी की सामाजिक स्थिति और उसके आदर्शों में बदलाव आता रहा है।

नारी को जब परिवार में अपनी अस्तित्वहीनता का बोध होता है तो वह अपनी अस्तित्व की रक्षा हेतु बाहर नौकरी करने लगी है, तो उन्हें घर और नौकरी दोनों की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। नौकरी करते हुए अपने सहकर्मियों से, अफसरों से बचकर रहना पड़ता है, क्योंकि अधिकारियों की उनके अधीनस्थ काम करने वाली नारी की ओर दृष्टि बदल जाती है, वह उसका फायदा उठाने प्रयत्न करते हैं।

नारी चेतना के कारण शोषण के खिलाफ संघर्ष करके नारी ने अपने को सजग किया, अधिकारों के प्रति जागरुक बनाया और आर्थिक स्वाबलम्बन भी प्राप्त किया। अधिकारियों द्वारा नारी की इसी चेतना को स्वीकार नहीं किया जाता। अधीनस्थ के द्वारा बात न मानने पर इस कदर फंसा दिया जाता है, कि कई बार नारी भी उसके चंगुल से निकल नहीं पाती। उसके गलत व्यवहार पर विरोध करती है तो अधिकारियों द्वारा उसे झूठे केस में फंसा कर उसे कार्य से निकाल दिया जाता है।

आधुनिक काल में नारी के अस्तित्व की परख उसके आर्थिक स्थिति को देखकर की जाती है। नारी अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नौकरी करती है। अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्य करने वाले को अधिक कार्य देते हैं और उन्हें उचित परिश्रमिक भी नहीं देते हैं।

## सहपाठी के संबंध में नारी चेतना

विद्यालय में पढ़ने छात्र–छात्राओं के बीच मधुरता का संबंध होता है। आपसी सहयोग उनके संबंधों का आधार है। उसके साथ पढ़ने वाले जब उसका सहयोग न करके उसे नीचा दिखाने में, उसका मजाक उड़ाने, उसके साथ अनैतिक व्यवहार कर अपमानित करने की कोशिश करते है तो नारी चेतना के कारण वह अपने इस अपमान को सहन न करके सहपाठी की वास्तविकता को लोगों के सामने लाने का साहस करती है व अपने सहपाठी द्वारा गलत व्यवहार का बदला भी आक्रामकता के साथ स्वयं लेने की क्षमता रखती है। 'मुन्नी' कहानी की 'मुन्नी', 'नरक–दर–नरक' उपन्यास की 'उषा', 'दुक्खम्–सुक्खम्' उपन्यास 'मनीषा' ऐसी नायिका है।

'नरक–दर–नरक' उपन्यास की 'उषा' को उसके साथ पढ़ने वाले सुभाष तुरखिया द्वारा जब अपमानित किया जाता है, तो सहपाठी के प्रति उसके मन में तिलमिलाहट होती है। 'उसने सोच लिया था, अगर उसे और अपमानित करने की गर्ज से सुभाष तुरखिया उससे माफी माँगने आया तो वह तेज शब्दों में डाँट देगी।

## निष्कर्ष

इस प्रकार ममता जी की अधिकांश नारियाँ पारिवारिक ऊब, तनाव, अजनबीपन तथा अलगाव की स्थिति में अपनी विवशता का चिंतन करती है। पारिवारिक संघर्ष के इन्ही बिन्दुओं पर उनकी चेतना के अस्वीकारात्मक पहलुओं में जन्म देती है। दाम्पत्य सम्बन्ध परिवार की नींव है। गृहस्थी रुपी रथ के दोनों पहिए सुचारु रुप से संचलित होकर जीवन रुपी पथ पर चलते हैं तो सुखरुपी उद्दिष्ट स्थल तक बिना बाधा के पहुँच सकते हैं। परन्तु मानव जीवन निश्चित परिपाटी पर चल नहीं सकता।

## संदर्भ सूची

1. कालिया, ममता, *''बेघर''*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण 2002।
2. कालिया, ममता, *''लड़कियाँ''*, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1987
3. आशारानी, *''भारतीय नारी– दशा, दिशा''*, नेशनल पब्लिसिंग, दरियागंज, नई दिल्ली व्होरा, पृ,सं, 18।
4. कालिया, ममता, *''एक पत्नि के नोट्स''*, किताब घर प्रकाशन, 1997, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली –110002।
5. धर्मपाल, *''नारी एक विवेचन''*, भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1996, पृ,सं 5।
6. कालिया, ममता, *''दौड़''*, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण, नई दिल्ली 110002।

********